

न अल्प हस्ताय दवीत्तद्वयवस्तु य काय विन्दु मूदा धा नाय सिंहासनाय दकि
 लम्भम्भना धिय तय स होरे न वाय दूँ ३ खा हा ॥ ३ ॥ ॐ दौं दौं दूँ ॥ श्री अग्नि
 जि होरे न वाय दूँ ३ व वस्तु वी होरे न वी ये किय हिताय धूमव अस्तु यि च
 तुर्व काय ना दूँ जा य न्त ल्य नूयाय कपित्त कम्भय दूँ क कना न व दना
 य वर्व ना दूँ नि ना न हाय मूँ मा ला ह न ल्मय वि दूँ ल्य हाय ना ग ह न ल्म
 य ना वा नूयाय स म दस्तु कस्तु धनू स न या ग उ म नू व द व द हस्ताय द वीत्त
 दूय वस्तु य काय विन्दु मूदा धा नाय सिंहासनाय न स लम्भम्भना धिय तय स हा
 रे न व नूयाय दूँ ३ खा हा ॥ ४ ॥ ॐ दौं दौं दूँ ॥ श्री काला करे न वाय दूँ ३ धूमं वी
 रे न वी ग किय हिताय धूमव अस्तु यि च ॥ ५ ॥ ॐ दौं दौं दूँ ॥ श्री काला करे न वाय दूँ ३ धूमं वी

2250 I

187
 Agastya
 Middle.

ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ सौम्यी कलत्रा ॥ तन्वनाय पाइका ॥ ॥ नृनिदला दूव ॥ लपति ॥

अथ दमदू ॥ डामा रुका ॥ बुझीती ॥ आस ॥ ॐ हं सा सनाय ॥ धनै ॥ हं सा सन ह्मिता
धनी ॥ यागां जिन विध विगी ॥ पीत वलु ॥ वडु वडि ॥ सर्वा लंका नरु पिता ॥ अरु यरु कलाद
क वा भव वलि पाउक ॥ अवरु यरु यन्मनु विन्दु विन्दु पुराय ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥
ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥
सनाय नमः ॥ धनै ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥
वदं यरु यरु क ॥ कवरु यरु यरु दवी मरु या ॥ पूर्व वत्सदा ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥
दथै ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥
॥ कुमारी ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥ ॐ नमो गौरी गुरुभ्यः ॥
रावा लाव काटिरा चिता ॥ वडु उजा कमा ला व वा भन कि धना वचा ॥ वने दा वाम का पा लं स

वर्तिका नवविता । चवर्ग पूजयद्दवी ख । पुनरु ससंयुतं ॥ दवी कूटन व । पुन पूर्ववत्सम
 काययत् ॥ ॐ वं कूं जूं जूं जूं ॥ वं को मा नी य वी ३ ॥ वली ॥ ॥ वामू लु ॥ ॐ य तो स ना य २
 ॐ ग्रा व न कि क म ला स ना य न ८ ॥ म ४ ॥ ॐ ग्रा व न का स ना य २ ॥ ॐ कं दा स ग ॥ ॐ ना ला स ग ॥ ॐ प ग ॥ कं ग ना
 या व नू पा ति नो दा व व लु नू पा ति व लु क ॥ दे ह्ना क ना ल व द ना पु न म्ना प वि सं स्क्रि ता ॥ नि म्ना
 स्य का ल ना जी व मू ल मा ला वि रु ष म् ॥ स्व कू ट क ध नी द वी उ म र्ने स्व ं द्वा रु धा वि दी ॥ क ह् क था
 ल ह् क था व वि न्द या ष ध मा क्थ ॥ व र्च ना पि न क त्प त्व पि नू पि नू ला व ना ॥ स व र्ति न न ह् रू षा
 श्री रु ज र न ल ह् वि ता । उ ड्ड कं नी वि नू पा व वामू लु अ य न म् त्व नी ॥ ॐ वां वां वूं वूं ॥ वामू लु ॥ द
 या ये पा ३ ॥ वली ॥ मू द ॥ ॥ वै प्र वी ॥ ॐ ग नू ज स ना य न म ४ ॥ ध्यानं ॥ ॐ स्व ग न म
 न मा नू र्णा म् व लु म ह् य गि । सर्वा लं का प्र ल रा द्या व लु उ ज वि ना जि ना ॥ व क को मा द की वा

[illegible]

कृष्णभक्तिः। वनदा वामकापालं पवनपुत्रं तस्यदा॥ दक्षिणं समस्य च सूनं चैव पुत्रं
गा। सर्वसिद्धिपदा दक्षिणं सर्वपापप्रमोचनी॥ नैऋतं वैश्वं मेषं पुंयं वैश्वं दक्षिणं विष्णुपाइकी॥ वली॥
वामं॥ नैऋतं सन। यनम॥ ध्यानं॥ जतिमीकसमयं चैव। विनयाय नमः॥ यथाद
जम्भुसूत्रं सुखातीति तवार्चका॥ द्विपिवर्मायत्रीधनानामखताम्भुवातका। स्वप्रकृतकध
नीव उमर्खद्वामभवत्॥ कर्मसुखमरुवटं॥ अत्र ककयालको। पित्तवर्धनवताल विवातव
संज्ञिका॥ एवं विधाय वामं॥ य वनपुत्रं तस्यदा। दक्षिणं दक्षिणं जपुर्गुम्भिमाहकूटं तथैव
महाशयसुर्ववद्वीका उन्नतं वैश्वं विना। ग्रीष्मसिद्धिपदा दक्षिणं वामं॥ दक्षिणं मालिनी॥ नैऋतं
नैऋतं वैश्वं यवामं॥ विष्णुपाइकी॥ वली॥ ॥ महात्मनी पूजा॥ सिंहासनाय नमः॥ ध्यानं
सिंहं चैव काठि वन्द्याह विनयाय नमः॥ स्वप्रकृतकधनादक्षिणं वनदा वामयत्नं॥

वर्गमर्चनसमयकृतनेवठमल्लिका। पूर्ववत्तद्व्याविदायथत्यत्रमन्त्रवरीभेदे। मंत्रसंहारं ८
 मंत्रां गं महालक्ष्मीविष्णुपाइका। वली। इति अष्टमाहकायुजा। ॥ ८ ॥ तथा मंत्र
 यो यो पूजा। मूलजवसवा मूल। ॥ जे पुतासनायनम ४॥ ध्यानं ॥ दंडाकनालवद
 नाकेरुकापापमवचे मूलमालाधरादवीषतस्तेवनभात्रुत ॥ जे वां वी वूं वूं वी वूं ४ वूं य
 वा मूलमदवी विष्णुपाइका। वली ॥ ॥ खवस कोमावी ॥ जे मयूनासनायनम ४॥ जे
 ध्यानं ॥ अग्निरकावठुज्जा गकिपूल अर्धाविती। सिद्धिपात्रकादवी मयूनासनममि
 नी ॥ जे कां की कूं कूं कूं ४ वूं कूं कूं मावी विष्णुपाइका। वली ॥ ॥ मध्या ॥ जे जे
 नासनायनम ४॥ ध्यानं ॥ का जे लवर्तु महाकाय कपालगूलधाविती। मूलमालाधरं यो द्य
 तवाहनममिनि ॥ जे नमो नमो वेति मूं मूं रुद्रिकां डों डों डों दशरानम अर्धावा मखिकां

कैं किनिश् विव्वे पाइको पूजया मिनमः ॥ जे अनादिमहापी ॥ १० ॥ मन्महा कथको तटहं
कडिकाये म्मी कलवक वनानन्दनाथ पाइकां ॥ वली ॥ जे अनादिमहापी ॥ १० ॥ मन्महा
कथको तटहं म्मी कडिकाये म्मी कलवक वनी दथे पाइकां ॥ वली ॥
तताषुकि वली पूजा ॥ १० ॥ आस ॥ धन ॥ नै ॥ जिकिरी वक वरु शिव वरु नद्विनि वरु
हाननमवद्विउजा दवी करुकापाल धवि वी ॥ १० ॥ जे अनादिमहापी ॥ १० ॥ मन्महा
वली ॥ ॥ आस ॥ धन ॥ नाकिरी वक वरु शिव वरु नद्विनि वरु वरु हाननमवद्विउजा
दवी करुकापाल धवि वी ॥ १० ॥ जे अनादिमहापी ॥ १० ॥ मन्महा
लाकिरी धम वरु शिव वरु नद्विनि वरु हाननमवद्विउजा दवी करुकापाल धवि वी
१० ॥ जे अनादिमहापी ॥ १० ॥ मन्महा
१० ॥ जे अनादिमहापी ॥ १० ॥ मन्महा

[illegible]

सगतपनिवानायः दमयापस्य रूपदीपपूजायाः यानीतं वलिं गृह्ण २ मम पुन मद्दशसर्व
र्थसिद्धिप्रयत्नवलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ हूँ उ क रे व वाय मू लि व लि पि लि तं म म पू र्जां गृ ह्ण
२ सर्वा पि द व लार्त्ति कू र २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ हूँ कं खं गं घं ङं व नृ न क ज्ञाय व नृ रे व वाय कं
सा ह त्व श्री ग कि स हि ता य व ट वृ का य था गि नी ग ल स हि ता य ॥ हूँ ह्या दि ॥ ॐ शि पू ना
क क म हा रे न वा य मू लि व लि पि लि तं म म पू र्जां गृ ह्ण २ सर्वा पि द व लार्त्ति कू र २ स्वा
हा ॥ ॥ ॐ वं हूँ ऊं ङं ॐ काला पू न क ज्ञाय वे उ रे व वा य को मा वी ग कि स हि ता य व
ट वृ का य था गि नी ग ल स हि ता य ॥ हूँ ह्या दि ॥ ॐ अ नि व ता ल म हा रे न वा य मू लि व लि
पि लि तं म म पू र्जां गृ ह्ण २ सर्वा पि द व लार्त्ति कू र २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ हूँ हूँ उं हूँ नं अ हूँ हूँ
स क ज्ञाय का ट रे व वा य वे षू वी ग कि स हि ता य क ज्ञ म्ब वृ का य था गि नी ग ल स हि ता य

ॐ स्वादि ॥ ॐ अविजिह्वारे नवाय अलिव लिपिनिर्गममयूजां ट ॥ २ सर्वाप्यद्वयानि कुरु ॥
स्वाहा ॥ ॥ ॐ तं धेंदं धें नं जयन्ती पूर्वक गाय उ मरु नवाय वावादी गकि सहिताय नि
मरुकाय ॐ स्वादि ॥ ॐ कासा कुरु नवाय अलिव लिपिनिर्गममयूजां ट ॥ २ सर्वाप्यद्वयानि कुरु ॥
स्वाहा ॥ ॥ ॐ पुरु वरु मय विरु क गाय कपालिन ह नवाय ॐ दादी गकि
सहिताय क नं उ वृकाय यागिनी गलसहिताय ॐ स्वादि ॥ ॐ क वालिन ह नवाय अलि
वलिपिनिर्गममयूजां ट ॥ २ सर्वाप्यद्वयानि कुरु ॥ स्वाहा ॥ ॥ ॐ य वलें वलें जका
प्रक क रुयिती घवले नवाय वाम अत कि सहिताय अ वरु वृकाय यागिनी गलसहिता
य ॐ स्वादि ॥ ॐ न क पाद ह नवाय अलि वलिपिनिर्गममयूजां ट ॥ २ सर्वाप्यद्वयानि कुरु ॥
स्वाहा ॥ ॥ ॐ व स ह लें क द वी ष क राय सहा न ह नवाय महा ल न्नी
गकि सहिताय प्र क वृकाय यागिनी गलसहिताय सा अ य स ग ल प वि वा नाय ॐ

मयापूषाक्षपदीपयूजाय (धमपनीतं वलिं गृह्णन्मम गुरुनमस्करं सर्वार्थसिद्धिं प्रयच्छ
वलिं गृह्णन्स्वाहा ॥ ॥ गुरुं त्रिपुयागमदि वली ॥ ॥ तं मां जया दिव्युजा ॥ ॐ कौं
कुं जयाय वलिं गृह्णन्स्वाहा ॥ ॐ श्रीमन्मन्त्रं नवाय अलिवलिपितं मम यूजां ग
वृं क्रमं सर्वपिद्वन्मन्त्रं कुरु स्वाहा ॥ ॥ ॐ कौं ब्रुं विजयाय वलिं गृह्णन्स्वाहा
ॐ कौं हनुकरं नवाय अलि त्यादि ॥ ॥ ॐ कौं ब्रुं अजिताय वलिं गृह्णन्स्वा
हा ॥ ॐ सुवक्त्रं नवाय अलि त्यादि ॥ ॥ ॐ कौं यं ॐ अपनाजिताय वलिं गृह्ण
स्वाहा ॥ ॐ मधुरा सुवक्त्रं नवाय अलि त्यादि ॥ ॐ ॥ ॐ कौं यं ॐ कुरुनी वलि
गृह्णन्स्वाहा ॥ ॐ सर्वविघ्नविनाशनं गणेशं ज्ञात्वा ॐ कौं महादेवं ॐ वायुश्राद्धा
श्रवतं नव वलिं गृह्णन्स्वाहा ॥ ॥ ॐ कौं भू कुरुनी वलिं गृह्णन्स्वाहा ॥ ॐ कौं स
र्वद्वन्द्वं ॥ ॐ गलवन्द्या वलिं गृह्णन्स्वाहा ॥ ॐ कौं स
र्वद्वन्द्वं ॥ ॐ गलवन्द्या वलिं गृह्णन्स्वाहा ॥ ॐ कौं स

३ दशरथी धनपूजा दशपातनमालक जावाकपूजा॥

स्वाहा॥ ॥ हुं ह्रीं श्रीं माह नो वलिं टक्र स्वाहा॥ हुं ह्रीं सर्वगं वसुं सगलं वन्द्यं वलिं ट
क्र रं कमस्व वनदाम ३ म सर्वपदवत्तमं किं क्व स्वाहा॥ ॥ हुं ह्रीं श्रीं आ कर्षये वलिं टक्र
स्वाहा॥ इति अयादि पूजा॥ ॥ नमो भगवते नमो भगवते ॥ ० तु कर्तुं स्वामी॥ त्रिकावस्था
ने॥ आयानं वरुणं व कामं नृपं व वरुणं॥ आनं धनं मर्द्धं वन्दुं त्रिका॥ लीपुर्गु निवीरुवता॥
हुं कारं मधुदं लीपुजा तात्वा द किं लनतु॥ पूरुषी ० किं न वामं ज॥ यथी काम नृपकं॥ ॥
त्रिका॥ सा व इ का वासा॥ जालं धनं पी०॥ धनं॥ आनं धनं त्याम वरुं उ क व कु व ड उ जा
खड्ग तूल धनो मीमांसा कटु वि को यता॥ पूजयं त्य नमो भगवते पनाद्या किं न खलुता॥ इति धन
नं पूर्य नमो॥ हुं ह्रीं आनं धनं पी० भयजानं धनं नन्दनाथ॥ यजानं धनं पी० वा नमो भगवते॥ विश्वती
॥ ॥ ० तु लीपुर्गु निवीरुवता॥ धनं॥ पूरुषी ० पित्र वरुं उ क व कु व ड उ जा॥ सुखा
नीयं यदं रुमु मृत्तकं मुकया लधु क॥ पूजयं त्य नमो भगवते पूरुषी ० किं नमस्तु॥ इति

[illegible]

दित्यवर्षमात्राकावसनिहाकावायप्रनागसमपरा॥ सर्वनत्रविविधाश्रीगुम्बिकाउतवि
पराभूसायमकुजादवीनानायद्वनलायता॥ नानावसधनीदवीरैताक्षनान्यविशत॥ ख
प्रंघालीकामसर्वकपालकलिलधुतं॥ वधाम्रं चतथाद्यलंनत्रममुवतयदा॥ रुटर्कधन
यातचखद्युदं वकमलुलं॥ मूलमूत्रववेलाचगवनी चालनकनामलुतं वद्विवातुतिर
त्रयवउवती॥ तिष्ठान४॥ उँ सँ रे सुअवनीपनाम्वाली३॥ वती॥ उँ हँ रे सँ रे पतुपतिमहारे
ववायुसँ रे हँ रे सुअवनीदये३॥ उँ पं वपुतासनायनम४॥ उँ कौं लीं कुँ कुँ कुँ उँ नमरुतेववाय
सँ रे हँ रे सुअवनीपनाम्वाली३॥ ॥ अथमूलदानसंपूजा॥ उँ आरावगक
यदा॥ उँ आदिनाथसनायनम४॥ कौं रे वनाथसनाय२॥ लीं सोमनाथसनाय२॥ खुँ आम
दकनाथसनायनम४॥ कुँ महोपासनायनम४॥ ध्यानं॥ अमर्षपक्षाननं पक्षदशनं

[illegible]

वरेववनाथ३॥ नैकाँजीनकाँधिरववनाथ३॥ नैकाँजीनकनरववनाथ३॥ अतनवती
॥ ॥ अथवाकिवाहकपूजा॥ उँकाँवा मरुवा किलीगक्षेपाइकाँ॥ उँकाँवूमरुवूवि
कालकै३॥ उँकाँमरुयकुलाहिकालकै३॥ उँकाँमरुवावाहिकालकै३॥ उँकाँवमरुवकनू
षिकागक्षे॥ उँकाँपिमरुपिलिखापिलकै३॥ उँकाँवूमरुवूगकलागक्षे३॥ उँकाँवू
मरुवूमिकागक्षे३॥ अतनवती॥ ॥ अथसिद्धनाथपूजा॥ मंजुसिद्धिनाथनिवृत्ति
कलापाइकाँ॥ मंजुसिद्धिनाथगतिकलाये३॥ नंसिद्धिनाथवामकलाये३॥ नैधाम
सिद्धिनाथअष्टाकलाये३॥ उँनागसिद्धिनाथनोडाकलाये३॥ उँतननसिद्धिनाथअष्टिका
कलाये३॥ उँकाँजीकूगिखत्वमहादेववाय३॥ अतनवती॥ ॥ ततामपुजाकिलीपूजा
नैकाँजीकूगिखत्वमहादेववाय३॥ नैकाँजीकूगिखत्वमहादेववाय३॥ नैकाँजीकूगिखत्वमहादेववाय३॥

श्री ॥ उँ काँ कीं कूँ मूँ काँ का कि न्ये ३ ॥ उँ माँ सीं तूं मूँ साँ सा कि न्ये ३ ॥ उँ हाँ हौं हुँ मूँ हाँ हा
 कि न्ये ३ ॥ धन नैव यै ती ॥ ॥ उँ जहं हूं मूं मूं तूं यै कीं हूं कीं हूं कीं हूं कीं हूं कीं हूं तूं कीं
 जमृत विद्वाने दहि छिये दहि ऊ लोदहि सिद्धि दहि वति गेट २ स्वाहा ॥ उँ कीं वीं हूं
 को उँ कीं कीं काँ कीं कूँ मूँ हनु काय मूं श्री मे भूता दवी स्वर्ग कि स्वयं विवा नमहि ॥
 यं पूर्व वल्लभ महा भगवत् नाधि पत यं श्री श्रवणा गुरु अँ औं श्री अ सिता प्रहे नवा
 यव काली पनाम्ना अति वति पि निर्म महा पूजा गेट २ ॥ किं कुरु २ स्वाहा ॥ इति ॥ नृप वली
 ॥ उँ कीं कीं काँ कीं कूँ मूँ श्री छिपना क काय मूं श्री काला माति नी द वी स्वर्ग कि
 सहिताय स्वयं विवा नाय अलन यै यकी ला ला व महा भगवत् नाधि पत यं श्री श्रवणा गेट २
 काँ नूँ श्री नूँ महा रे नवाय श्री माह वी पनाम्ना अति वति पि निर्म महा पूजा गेट २

सिद्धिं कुरु स्वाहा ॥ ॐ ह्यो नमो वती ॥ ॐ जं जं जं जं कौं कौं कूं कूं अग्निव
नालाय भूं श्रीकाकिनी दवी स्वतकि सहिताय स्वप विवाव सहिताय द। किले धूं गदत
महात्मना नाधिपतय श्रीरकानाय नमहा कुरु उं दुं जीव लुमहा रे नवाय श्रीको मोनीपना
मो अलिवलि पिलितं महायुजां टक्र २ वत्थं कुरु स्वाहा ॥ ॐ नमो वती ॥ ॐ जं जं
जं जं कौं कौं कूं कूं अग्निजिदा कुरु पालाय भूं श्री अजिता दवी स्वतकि सहिताय स्वप
विवाव सहिताय धूं जं जं अघावाध कावायम हात्मना नाधिपतय श्री २ अहहा सम
हा कुरु जं जं श्रीका टसहा रे नवाय व प्रवीपना स्वा अलिवलि पिलितं महायुजां टक्र २
सिद्धिं कुरु स्वाहा ॥ ॐ नमो वती ॥ ॐ जं जं जं जं कौं कौं कूं कूं श्रीकासा का
य भूं श्री अमृता वती दवी स्वतकि सहिताय स्वप विवावाय वा वृष कासी धूं कुरु महा

[illegible]

[illegible]

ॐ ॐ ॐ
लीजे जा जा न भवपी ॥ ० पी ० नायकी का नाम निनी वरु नू प सा मिनी वलिं ट क २ खा हा ॥ मांसादि
दली ॥ ॥ ॐ की ॐ ॐ पुं पुं मिनिपी ॥ ० पी ० नायकी की पुं पुं वरु नाय स न नाय पुं पुं मरुता का मि
नी वरु नू प सा मिनी वलिं ट क २ खा हा ॥ मांसादि ॥ ॥ ॐ की ॐ ॐ का म नू पिनी पी ॥ ० पी ० नाय
की काम का मिनी वरु नू प सा मिनी वरु का मिनी वलिं ट क २ खा हा ॥ ॥ को ह क अ क क पुं
दे ल कु द ॥ का कली अ भु द विदिपी ॥ भयपी ॥ ० क व क न दी र्ग म जां जां ॐ ॐ ॐ ॐ स
व विद्यु प न म नि स व सिद्धि कालि आ वि त २ आ व न य २ अ ति व लि पि ति न व लिं ट क २ उं ऊ २
ॐ सि धि वा म अ य व लिं ट क २ खा हा ॥ व ॥ ॥ इ ति व उ षी ० व नी ॥ ॥ अ य वा ल स व
जा ॥ व मा अ धा न स न्या स ॥ ३ वि घा त य २ वि धि २ दू ३ रु ट अ न्ना य रु ट ॥ जां जां दू ष रु न २ व
नि ष्ट का य न म ४ ॥ दान २ न नू प अ नामि का थि खा हा ॥ व २ २ प व ट २ म ध म मा क रु २ व म २ न ऊ द
म २ घा ट य २ अं गु ष ३ वि घा त य २ वि धि २ दू ३ रु ट अ न्ना ॥ न व रु द य ॥ ॐ

[illegible]

[illegible]

ॐ श्रायं रुद्र २० ॐ वमं श्रुदं नवकुवाजाय पवकृतां क्विधि २ रुद्र २० ॐ सौ वेनाश्राय
रुद्र २० ॐ हूं हूं नाश्राय रुद्र २० ॐ हूं हूं कीलं सदैवाश्राय रुद्र २० मोलाश्राय रुद्र २०
हं सोमश्राय पवमहं साश्राय यंक ४ मं ३ स्व ४ ३ पिच्छिकाश्राय रुद्र २० हं साश्राय पव
महं साश्राय रुद्र २० ॐ रुंगवन पथिगं सिद्धाय महापापुपताश्राय नमो नमः ६ स्वप्नाश्राय
कालाश्राय नृपाश्राय सर्वविबीन्द्रानां नियातय २ गहृतिपातय दबासनागं मलय
नां समकितानां रुसं कुरु २ रुद्र ॥ श्रीमदीयमहानगव सर्वापद्रवनाशार्थं ॥ रुद्रं रुद्रं
सर्वत्र विष्णो सर्वं सत्त्वं किं कुरु २ रुद्रं ३ रुद्रं स्वाहा ॥ कलं ॥ यः ॥ रुद्रं पशुमानस्य विक्रमं
मित्रमन्त्रिणीं ॥ सर्वान् कामानवाप्नोति विना विघ्नं ॥ ६ ॥ दिव्यान् विक्रमं मानां
मूपातानां विना सहतां सर्वां त्यागनुमन्तां नाशने पवमं यंदं ॥ सर्वान् कृपयित्युक्तां अ
हं श्राय तमावशुगा इति महापापुपताश्राय ४ ॥ ७ ॥ पुनः दालसं ॥ अथावश्याम ४ ॥ ॐ हूं

नमस्तु नृप नृप ४ महापातु यता सुयत्न रुद्र ॐ त्यादि ॥ श्रीमानदल ॥ ॐ शं नृदायनमः सा
हा ॥ ॐ शं वृषायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं मूर्विमेकायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं असमृवायनमः स्वा
हा ॥ ॐ शं पूनृषायनमः स्वाहा ॥ नृदतत्व ॥ ॥ उरुनदल ॥ ॐ शं विष्वनृषायनमः स्वा
हा ॥ ॐ शं महाविष्वनृषायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं कनालनृषायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं विकृतनृ
षायनमः स्वाहा ॥ प्रकृतितत्व ॥ ॥ वायव्यदल ॥ ॐ शं एकपिङ्गलायनमः स्वाहा
ॐ शं द्व्यपिङ्गलायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं रुषूपिङ्गलायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं मधूपिङ्गला
यनमः स्वाहा ॥ नियततत्व ॥ ॥ पश्चिमदल ॥ ॐ शं मनकायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं आ
दायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं सूक्कायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं अवयवागल्लयनमः स्वाहा ॥ मम
तत्व ॥ ॥ ॐ शं कलायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं विकृतालायनमः स्वाहा ॥ माया
तत्व ॥ ॥ दक्षिणदल ॥ ॐ शं सहस्रकीर्त्यायनमः स्वाहा ॥ ॐ शं सहस्रवक्त्रायन

मः स्वाहा ॥ ॐ हं सहस्रकनकनयनमः स्वाहा ॥ ॐ हं सहस्रविंशयनमः स्वाहा ॥
विद्यातत्व ॥ ॥ आनयदन ॥ ॐ हं एकजंठयनमः स्वाहा ॥ ॐ हं द्विजंठयनमः
स्वाहा ॥ ॐ हं त्रिजंठयनमः स्वाहा ॥ ॐ हं स्वाहाकालायनमः स्वाहा ॥ ॐ हं स्वधाका
लायनमः स्वाहा ॥ ॐ हं वषट्कालायनमः स्वाहा ॥ ॥ त्वनतत्व ॥ ॥ पूर्वदन ॥ ॐ
रुतपतयनमः स्वाहा ॥ ॐ हं महारुतपतयनमः स्वाहा ॥ ॐ हं पलुपतयनमः स्वाहा
ॐ हं उमापतयनमः स्वाहा ॥ ॐ हं सर्वपतयनमः स्वाहा ॥ ॐ हं कालाधिपतयनमः
स्वाहा ॥ ॥ निवतत्व ॥ ॥ ॐ हं मां महादेवाय स्वाहा ॥ ॐ हं श्रीनिवाय हूं हूं स्वाहा ॥
ॐ हं हूं नूदाय हूं हूं स्वाहा ॥ ॐ हं श्रीलक्ष्मणाय हूं हूं स्वाहा ॥ ॐ हं हूं श्रीबी नो नो ताहि
ताय हूं हूं स्वाहा ॥ ॐ हं श्रीनारायणाय हूं हूं स्वाहा ॥ ॐ हं श्रीविजयाय हूं हूं स्वाहा ॥

नाहति॥ मवाथं पतवत्वेव दासा ४ कर्मकनाह ॥ ८५ किताविनूध न क त व म
किप्रयाजयत॥ कृपावागर्जत यदृष्ट वं म न रि य त म न वानाह तात्वेव
न धि रं ब द्धं ॥ देवतात्वेव वृकात्वेन न ह कि व व स न कि व ॥ अका न य पृथि ता वृका रू ति
न्याय न क ॥ ८६ उल्कापाता य जाय न रु मि क त्या य दा नू त ॥ ८७ नि मि रु न स रं व पि न ले
अपि न दा नू मे ॥ ८८ उल्का प्र प्र य ता रु ता न य म कि प्र या ज य त ॥ नू द म कि स मू ल्य लो क थं
व द्वा मि त त्व त ॥ ८९ यथा ॥ उं ईं उं क नू २ नू पि नि २ नू दा सि द वा नां द व द व वि त्त र व द न २ द
ह २ प व २ म थ २ उ व २ म नू २ नू द म कि स मू ल्य न रु प्प पि नू ल अ का ल पि म वा श्वि य त
य वि ल्य त्व रा य न म ४ स्वा हा ॥ उं ईं था म था पि न था म नू पा य स र्व था पि न नि वा य अ न
था य अ न्ना वि ता य भू वा य अ न ना य दि व त्वा य न म ४ स्वा हा ॥ नू ति म ॥

पूर्वदत्त॥ उं हं गायत्राय नमः स्वाहा॥ उं हं याम्ययी भयसं किनाय नमः स्वाहा॥ उं हं
 निर्यागि नमः स्वाहा॥ उं हं धाना नावाय नमः स्वाहा॥ उं हं उं नमः लि वाय नमः स्वाहा
 उं हं सर्वप्रवृत्तीनां नमः स्वाहा॥ उं हं तत्पुत्रपुत्रकाय नमः स्वाहा॥ उं हं सू
 द्याय नमः स्वाहा॥ उं हं मेरुतिवतत्वाय नमः स्वाहा॥ ॥ भूनिदत्त॥ उं हं मया
 वरुदयाय नमः स्वाहा॥ उं हं वामदवगुहाय नमः स्वाहा॥ उं हं सधाजातमूर्तय न
 मः स्वाहा॥ उं हं नमो नमः स्वाहा॥ उं हं पुष्पातिपुष्पाय नमः स्वाहा॥ उं हं मेध
 मः स्वाहा॥ उं हं ज्ञानधनाय नमः स्वाहा॥ उं हं सर्वयागविहताय नमः स्वाहा
 शातिवृषाय नमः स्वाहा॥ उं हं निवोक्तमाय नमः स्वाहा॥ उं हं नीलवतत्वं
 मः स्वाहा॥ ॥ दक्षिणदत्त॥ उं हं यत्रमत्तत्रपनाय नमः स्वाहा॥ उं हं मया

पूर्व ३

[illegible]

ॐ हूं नमो गजाकाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनीषाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजाय नमः॥
 ॐ हूं नमो गजनायकाय नमः॥ ॐ हूं नमो हवाकुन्दाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय
 नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥
 दिष्टवर्षा गजनाय॥ ॥ ॐ हूं नमो विष्णुनामाय नमः॥ ॐ हूं नमो महानामाय
 नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥
 नाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥
 पार्वती प्रियाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥
 ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥
 किलशा गजनाय॥ ॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥ ॐ हूं नमो गजनाय नमः॥

ॐ हूं गिरुख वायश ॥ ॐ हूं गी उलुव वायश ॥ ॐ हूं गुं सुदायश ॥ ॐ हूं गुं सो लु
 यश ॥ ॐ हूं गं महाली मायश ॥ ॐ हूं गे ममथयश ॥ ॐ हूं गें मधुसूदनायश ॥
 ॐ हूं गे मरुदायश ॥ ॐ हूं गं लम्बा दनायश ॥ ॐ हूं गं ४ संचुकायश ॥ ॐ तिदाद
 नय कादिपविमका गवुजा ॥ १२ ॥ ॥ ॐ हूं गं वक्र वायनम ४ ॥ ॐ हूं
 गं वक्रनायायश ॥ ॐ हूं गिं नृवृह वायश ॥ ॐ हूं गी घनयायश ॥ ॐ हूं गुं लया
 यश ॥ ॐ हूं गुं नृवृषियायश ॥ ॐ हूं गें लात्यायश ॥ ॐ हूं विकलुयि ॥ ॐ हूं गें
 वर्मवत्सवायश ॥ ॐ हूं गे कृताकायश ॥ ॐ हूं गं कालदलु ॥ ॐ हूं गं ४ कीना
 यश ॥ ॐ तिदादनय कादिउलुनका गवुजा ॥ ॥ अथ दान ॐ द्यादिपूजा
 ॐ हूं ॐ द्यायनम ४ ॥ ॐ हूं अग्रयश ॥ ॐ हूं यमायश ॥ ॐ हूं नैमहायश ॥

ॐ ४

हागलपतय वनवनद सर्वविघ्ननिवारणाय नमः॥ ॥ ॐ नमो गलपतय म
हावीर्यदण्डाय मन्त्रकालविनाशाय मृत्युं हनन् शकते सर्वदुःखमथ २ चेश
र्थमाहय २ वक्रविघ्नरूपा नमाहय २ अमाघवनयना के मे सर्वथा विविनाशाय
२ सर्वप्रहृष्टाय २ नागभक्त मोदय २ नृद्वयपितृवनजनसर्वताम्रवर्कुरुट्टा
हाविघ्नने रववृषण २ दमयाप्यधूषदीपपूजाय ॥ अथ नीतं टक्क २ सर्वविघ्नना
शय २ हनन् २ सर्वसिद्धिकुन् २ गजं वक्र २ महागलपतय कमस्य वनदामे मखाहा॥
वली॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गं गीं हूं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं महागलपतिनाथाय नमः ॥ त्वना
य हं वसु मरुतय गजमूखाय पिंगलवक्राय दण्डाय ह्रीं ह्रीं ॐ वक्रलागकि
सहिताय महार्जवागङ्गाय स्वतमूखाय वडुदलगतताथयसां गयसंगल

पवित्रांशाय सिद्धिनिधिषु दसर्वविघ्नयत्नमनी सर्वइ ॥ स्वयं भावनी सर्वपापक
लहान्नालय २ पत्रयनुमकुरुतु पत्रदद्यादिनालय २ वृक्षय २ रुक्मय २ मङ्गाज
नाजयकादिसर्वनागनालय २ सुखसौभाग्यसंमतिशायनायाय २ मूर्ध्नि च द
दधेन वाना दिव्या दिव्यसु सर्ववृद्धय २ गङ्गा कान्तिमन्त्रावधनमृन्मय
२ दद्यानां महाविघ्नमर्दय २ नागय २ सर्वइष्टान् वृक्षय २ सर्ववन्धभावय २
वन्धहारि चाननालय २ मन्त्रापदवन्धनिर्कुरु २ कुं २ ॥ मां अतिवलिपिनिर्गवलिगृ
ह २ पुत्र २ मूर २ वलिगृह २ सुखादा ॥ ७ ॥ लाकमहावली ॥ आवाकमडा ॥ धूय
दीपजाय ॐ ॥ ग्लो ग्लो मन्त्राय २ रुद्रस्वाहा ॥ १०८ ॥ श्राद्ध विधिर्था ॥ **पाशाक ॥**
॥ तिगजन्मनि महावलीसमाफा ॥ १॥ ॐ ॥ विघ्नत्वर्गनाशनं गजास्यं गजवाहनं

गजाकागजगीर्षवग (अयंगलनायकं ॥ विष्णुर्गुणं गलं गमनं ॥ अयि पूर्ववपकि
तं ॥ विष्णुगसंमहानागं लम्बाष्टालम्बकलुर्कं । लम्बादवंमहारीमं विकृतं पार्वतिपि
यं ॥ उगलम्बावहारुदु रुयद्युः रुयसूदनं । द्वादशमूर्तिनादद्याः दंदि (अप किं सं कि
तं ॥ दवजासंमहानागं लम्बावाउरुवस्तु ॥ सो लुसाय महानागं मन्मथामधुसू
दनं ॥ सुन्दरीवक्रयुष्टाय धविमास्तु पुष्टि ॥ बुद्धिस्ववृद्धिनाह निवृत्ति
पत्रयाक्तं । स्याय नृपियाय तालवेव विकर्तुं ॥ वस्त्रनायकताकायका
सनन्दविभूयका ॥ पञ्चसप्तगणेशाय विष्णुकातल्लेवव ॥ जयमानस्य इ वि
नायकमन्त्रार्थः ॥ दंमयापूयधूपदीपयूजा मुमुसा अवलिङ्ग २ लन्ति क्व २ कम
सववदाममसूदनवायसादा ॥ नूतिउनयपञ्चगणेशवली ॥

अथ अथ गति विधि लिख्यते ॥ ताल लात कंड धुं मद्रावली याथ ॥ जानसुं र्थ या मू
हिंदय क मद्रा म मात ॥ तायुका व द्वा दु पुका व ॥ ॥ धमू हिं दाल द थू सत ॥
नासिय ३ ॥ अयादि ॥ वाय ॥ जयमानस्ये अथ गति नास्तान सर्वापि द व ल र्थ म
हाव सो न निमिर्ल ॥ आस्र साधन याम यं १५ वं १४ यं ३२ वं १० ॥ न्यास ॥ ॐ अथ
हविर्ह व व क्ता त्म क मिश्र दि द्वा द ग त्म न व व ल दि द्वा द ग मा सा धि प ति स वृ य स्य
द्वा द ग व लु स्य गु या मू र्थ र ग व त ४ पी स र्थ ना ना य ल पी र्थ ॥ जयमानस्ये अ
थ ना ग त्म त्थ र्थ दी ध यि पा य र्थ जय वि निया ग ४ ॥ ॐ क्ता मि ग व वि र्थान म ४ ॥
ॐ क्ता ४ अ व र्ता क्ता र्था अ क्ता य र्थ ॥ ॐ क्ता मि ग व वि र्थान अ ग व क्ता य न म ४ ॥
ॐ क्ता स र्थ र्थान र्था त्ता नो स्वाहा ॥ ॐ क्ता स्व ग वृ र्था म म्भ मा यै व य द् ॥ ॐ

[illegible]

भस्त्रादि ॥ ॥ जलपागार्घ्यागार्घ्ययत ॥ उत पुष्ट्यात्मयुजार्क ॥ उं आरावट ॥
उं अस्मिन्नायनमः ॥ ॥ अर्चनं ॥ उं धवेलाष्टावृक्षानृतं वक्रवर्तुं विलाचनं ।
सुनद्रकमकातजं वृक्षमधुलमधनं ॥ अस्मिन्नायनमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥
उं कास्यविक्तयज्ञानं दिउजं नेकवासनं ॥ सुख्यस्य ॥ ॥ वं वक्तव्य ॥ वामहस्तं
वल्काग्वानितंदेति वनवत्खड्गगन्धर्वमोहद्विहस्तमसिन्दनं ॥ उवंक्षः ।
वाममनसावतर्कयुजथुत्सुधीः ॥ ॥ धावपुतिष्ठ ॥ जीवन्त्यासः ॥ वाघाघाविमनी
यमानपूष्यार्क ॥ ॥ वृजः ॥ नेमस्य ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥
उं अस्मिन्नायनमः ॥ उं गलपतयनमः ॥ उं अनुत्थानमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥
उं अस्मिन्नायनमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥
उं अस्मिन्नायनमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥ उं अस्मिन्नायनमः ॥

[illegible]

सा कस विद्याधनगवूत महावगहूत पुन पिताव कथाद मानूक्यादय सर्वा
पदव अन्वमासासौ त्वर्थ वलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॥ ॐ नमो दवाधिदवाय उर्वगवलवा
विने सूर्यपूजाय दवाय उर्वकानां हिताय उर्वगवविषय अन्व सूर्याधिपं वक्र
रमं वलिं गृह्णस्वाहा ॥ साक महावली ॥ क्षप दीपने वय जेय जो स्वाहा ॥ सु
खाहा ॥ ॐ कौसूर्यक्रियरुद्र स्वाहा ॥ ॥ ॐ ॥ सुगवाय पासाकादि ॥

इति नृवमातिवली ॥

॥ ॥ अथ नृवमागविधि ॥ मानसातक
महावलिथं ॥ जानव नृवा सुलिदयक ॥ मूलदालदधसत ॥ नवनागवलिनेहा
यक ॥ धनविथू नृदादिवली ॥ उपत् नामयत ॥ नागकुग ॥ कथातघाय नाग
चय २ कवन ॥ तीर्थसंख वहा साइ ॥ शयूत ॥ मका ॥ मरुत ॥ कलि ॥ पावन

चनलं पंवनत १२॥ कृत्वा वृहितादक ॥ रूपकं न प्रमकं न प्रियं गुं शाय
दाहल कमुनी कथ्येन प्रीत्येन कननी लूगह दालसं ॥ नवनागवति
संनागधेसंग ॥ ॥ वदुष्यागं कविस्थामि नवनागधेसंग ॥ ॥ सतिवाच
मनावृष्टि जापसाधक विस्थान ॥ ॥ यथराजनं ॥ निवाचन ॥ अथादि ॥
वाक् ॥ अयमानस्य अमकमहदवद्यनाम अनावृष्टि सर्वविषयवत्तमार्थमहावत्या
वृत्त ॥ आत्मा ॥ अविद्यासं ॥ वनिष्ठास्यमनिष्ठाक विष्णुचमूदाहता ॥ वन ॥
दवतापोक सुवर्णनक कल्याना ॥ ॥ न्याम ॥ वं अमुक यदुह ॥ वं कनिष्ठा
यनम ॥ वं अना वं मधु वं कनिष्ठा वं अमुक ॥ ॥ वं अना वं मधु वं कनिष्ठा
॥ वं अना वं मधु वं कनिष्ठा वं अमुक ॥ ॥ वं अना वं मधु वं कनिष्ठा वं अमुक ॥ ॥
॥ वं अना वं मधु वं कनिष्ठा वं अमुक ॥ ॥ वं अना वं मधु वं कनिष्ठा वं अमुक ॥ ॥

श्रीनहाय ॥ ॐ शंख ॥ अनकायविमल वनूनागनाजायधीमहीतनासर्थश्च
दयात् ॥ ॥ अथपादपूजाउत्तुष्टात्मपूजा ॥ श्रीसमस्तानावेकन ॥ शिदव ॥
नागवेपूजा ॥ ॐ यमासनायनमः ॥ ॐ नागमुर्त्यनमः ॥ ॐ कौबू वनूनाय ॥
ॐ ॥ ॐ नागपादधनं वनूनाय विग्रह ॥ ॐ नागपादधनं वनूनाय
कवासनं ॥ अनकावासकीर्तक ककाटकमतः ॥ यम ॥ ॐ वनूनाय ॥ ॐ
पादादि कलीकः ॥ ॥ पूजा ॥ ॐ वावीवू वनूनागनाजाय अनकाय
पूजलनागनाजायनमः ॥ ३ ॥ ॐ नागपादधनं ॥ ॐ वनूनाय ॥ ॐ
नाकाय वनूनायनमः ॥ ॥ अथपूजवतीपूजा ॥ ॐ यमासनायनमः ॥ ॐ
अनकावपूजाति ॥ ॐ वनूनाय ॥ ॐ नागपादधनं ॥ ॐ वनूनाय ॥ ॐ

[illegible]

शिवबद्धमकवर्जुसूतजसं। रुद्रपंचसूतमहाद्यं ॥ उरुवादिगमा
 कायसंखपालनमानमः॥ ॐ हं सः यवर्जयैवं लवं मं नीं नूं नूं नूं लंखपालनागवाजा
 यनमः॥ ३ षष्ठं ग॥ ३ ॥ ॥ श्रीमानका (॥ ॥ श्रीमान ॥ कलिका ॥ नागवाजाय कृष्णव
 पुंसूरीषलं रुद्रपंचमस्तकोवनीलात्यववरपदं॥ ॥ श्रीमान ॥ दिगमानृत्य कालि
 कायनमानमः॥ ॐ हं सः यवर्जयैवं लवं मं नीं नूं नूं नूं लंखपालनागवाजायन
 मः॥ ३ षष्ठं ग॥ ३ ॥ ॥ अथ ॥ श्रीमान ॥ श्रीमानायायनंदवं ॥ लंखपालनागवाजायन
 आवाहयामितमदं विष्णुपालनावासिनं॥ ॐ हं सः अथ रुद्रायनमः॥ ॐ हं सः
 अनकायवक्ररुद्रकायपतेयक्रमसिनायनमः॥ ३ षष्ठं ग॥ ३ ॥ ॥ उद्ध ॥ श्रीमान ॥ श्रीमान
 रुद्रिकसंकारं सावृटमहावर्जं॥ आवाहयामितमदं वक्रावर्जं श्रीमानायकं॥ ॐ ॐ ॐ
 वक्रावर्जपद्मकायसं नीविघतयदसासनायनमः॥ ३ षष्ठं ग॥ ३ ॥ ॥ मथ्युजने॥

॥ उरुवादिगमा

संख्यालनागवाजा

नागनाडायकृष्णव

दिगमानृत्य कूलि

पुनः कनागना जायन

गर्ववक्त्रं लोचनं च

न्यायनम ४॥३॥स ४

॥ ३६ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

नमो नाथका उ उ उ

॥ मध्यमूकन ॥

[illegible]

डा॥ पद्म॥ मलिमूडा॥ धूप दीप नैवय॥ आय सिद्धि॥ ॐ हं श्रीं अनन्ताय स्वाहा॥
ॐ हं श्रीं वासुकीनागनागाय स्वाहा॥ ॐ हं कुं क कटाय स्वाहा॥ ॐ हं कुं वृषभा
यस्तु स्वाहा॥ ॐ हं सुं सुं खपाताय स्वाहा॥ ॐ हं कुं कुं लिकाय स्वाहा॥ ॐ हं
सुं वरुणाय स्वाहा॥ १०॥ ॐ हं नृणां वा स्वाहा॥ ॐ वृं वरुणाय रुद्र स्वाहा
ॐ हं कुं नृदाय रुद्र स्वाहा॥ ॥ श्रीं श्रीं नृदाय रुद्र स्वाहा॥ अनन्ता नागनागाय
स्वाहा॥ वृकनकाय॥ दक्षिणादि॥ ॥ अनन्ताकाय॥ वलिधाय॥ मूलवलीश
नयायीशकाय॥ तस्य मास २३३॥ ॥ नृतिश्रुतावृष्टि महावलीशमाका॥ ० १०

अथ सूर्यपूजा अथवा मृतसूर्यपूजा नाम्नि विधि ॥ कायाध्यानासुताक ॥

इत्तासपत सपातननागमय ॥ यं वतत नववत लं गहं स्वातनमिवाकृय ॥ वितः
ऊरुमस्यानन ॥ विवाचम्य अथति वास ॥ ऊयमानस्य गृह सूर्यपूजासर्वोपद्रवसक्त
र्थमहावलीवर्त ॥ अस्त ॥ ॥ आसा ॥ उं नूडमषयनमः ॥ तिरति ॥ पंकि च्छन्दसः ॥ मूर्ख
पं नूडायतीदवताये ॥ हदि ॥ नमः पायया ॥ गुध ॥ स्वाहागकं यः ॥ सर्वादि ॥

कालः महासनीस्वाहा अंगुष्ठास्थानमः ॥ गनूजवृजामलो मर्जनीस्वाहा ॥ गनूजलि

खी मध्वमास्यावषट् ॥ गनूजपुर्णजनपुमदने ॥ स्वाहासनामिकास्याहं ॥ उं हूं गनूजकायहृत् ॥

॥ अग्न्युपधनसर्वविषहन्तीस्ययः सर्वदहः रुसीकृन्नेर स्वाहा हृदयायनमः ॥ क

वः महासनीतिवसस्वाहा ॥ गनूजवृजामलो निखायवोषट् ॥ गनूजलिखिकववायु

हं ॥ गनूजपुर्णजनपुमदने ॥ ननूजयोयवोषट् ॥ उं हूं गनूजकायहृत् ॥ पूजनं ॥ उं

अष्टावडा ॥ त्रैनागसनायनमः ॥ ध्यानं ॥ वस्त्राभिरावृत्तियुग्मादसकलकमलगतं पंच
रुतायवर्षं कन्याकल्पं रुचीदेवव्यवनकन्यपद्मनयं सुवर्क ॥ इहोदि कृषितुलुंम
नदखिलविषयप्रापयं पालहतं पालप्रिया ॥ विद्यदीतनममृतमयं पदिवार्जक
हं ॥ ॐ निधने ॥ जीवव्यासः ॥ श्रीगुरुदत्ताया ॥ ॐ हागक २ ॥ ॐ तिष्ठ २ ॥ ॐ सनिहिता
रुव ॥ ॐ सनिवृद्धारुव ॥ ॐ गविहानकन २ ॥ ॐ ममपूजा ॥ ॐ २ खादा ॥ ॐ ऊं कौं यं वसेव
नं संहं कं साहं हं ॥ ॐ गुरुस्य प्राप्तिः ॥ ॐ ह्याराम ॥ ॐ ऊं कौं यं २ साहं हं स ॥ गुरुस्य
जीवः ॥ ॐ हस्ति ॥ ॐ ऊं कौं यं २ साहं हं स ॥ गुरुस्य सवर्द्धिदिया निवाभनवर्द्धि ॥ ॐ
प्राप्तप्राप्ति ॥ ॐ कौं यं यनानि ॥ ॐ हागतीमुखं विवर्तिष्ठतु खादा ॥ ॐ ऊं कं टं कं यं
वैतनयायनमः ॥ ध्या १ २ ३ ४ ५ ॥ ॥ पूजा ॥ अष्टदत्तपद्म अष्टकृत्नागवा

जनपूजा॥ दत्तमवर्गमस्तन॥ ॥ रूद्रादिनपूजा॥ ॥ मृत॥ ॐ कृत्तकयं न वे
नमयाय नमः॥ अष्टारुन १०२ रुद्रसा॥ मरुतसा ३॥ वरुग ५॥ वसी॥ ॥ ॐ नमो गव
तगवृजयकात्तानि वरुयि ५॥ कृदिकानानलनालजिकाय पातय २ भादय २ वि
वावय २ यमय २ शासय २ हन २ दह २ पच २ सव विद्वं नानय २ गृह्णु २ कृत् २ गृह
मर्त्ति कृत् २ स्वाहा॥ ॐ नमो गवतगवृजय महत्तुयाय पवत लिखनाका मरु
याय संहन २ भाचय २ वावय २ पातय २ निर्विषय २ विषमय मर्त्त स्वाहा नमो ५॥ नृ
यमि मय द्वापया मिस्वाहानमः॥ नन २ वल २ पदि २ हन २ स्वाहा॥ ॥ अन्ननग
नृमर्त्तनमकी गवृजाहत्वा अरिमर्त्ति न स्वावर्त्तनमं विषरुद्रि नमय मर्त्त रुवति

ॐ कं टं कं यं न वे न न यां य स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ उं रुं वं ॥ स्वः ॥ सर्व पिद वं नान्यि वलि नृ क्र २
स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ कौं कौं कूं कः ॥ कौं गं रुं जा कुय रुट स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ हूं हूं नाग कुय
रुट स्वाहा ॥ ३ ॥ षडं गं ॥ वनी ॥ ॥ आवा क्र म् प्रो य म् कृ ॥ ॥ धूप दीप ने व द्य ॥
जाप ॥ ॐ कौं कौं कूं कः ॥ कौं गं रुं जा कुय रुट स्वाहा ॥ १०८ ॥ ॐ हूं हूं नाग कुय रुट
स्वाहा ॥ १०८ ॥ क्र ॥ नमः सुखे गन्दाय नमो मा मा नृ न वे रु स ॥ काम रूपाय दिद्याय वे
न न यां य न न म ॥

~~नमः कृष्णाय~~ ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
सु न हा थ ॥ **दक्षिण** ॥ अरुं ग विसर्जने ॥ वा ह्या दा व धित स्य स्व सि पा ल या न कं धि
न य क ल क्ता थ ॥ पं च ग थ न कृ स हा थ ॥ सा स खि न व धि ल क ॥ ॥ नृ नि स च्य यु व न म

तस्यैव वराणां किमहावती समाप्ता ॥ ० ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ दशवल्गुमन्त्रः ॥
नवमुखा वामाक्षः सुखिते वागमरुदा ॥ दवीर्गकवचो रुद्रजयतीकवस्तुना ॥ अल
वि विमिषास्थाना ॥ महावलिमनूरुमः ॥ ॥ ॥ ॥

१ नमो गजराय ॥ तीर्क्ष्णवक्षुः प्रकाटं विदति रुजगं सर्वकाका तूद्यात् पक्ष्मपाणिघातं वलति
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अजतं च पक्ष्मकं रुद्रिदिवहलितं गवत्सर्तं सदा दं वन्द्यदं
वेन तयं विदगकृतपतिनागसक्तसकानं ॥ गजराय ॥ ० ॥ श्रीगजराय नमः ॥ क
कुमाकि तसर्वाङ्गं कपुन्दुधवलाननी कार्यसिद्धिं गवत्सर्तं विष्णुवाहनविभूतं ॥ स
पक्ष्मवन्ततयं वनागं ॥ विनागरुपक्ष्मं ॥ विषाककं कितो विवस्त्रं कितं विवस्त्रं चितं
॥ गजराय वरगपतिं तार्क्ष्णकाय नन्दनं ॥ अतानि द्वादशनामानि गजराय महात्मन
॥ वध्वर्धनं किमाप्नाति सर्वं विजयीरुवत् ॥ इति गजराय दशनामस्तु ॥ अथ नमो ॥

[illegible]

नाय ^{का} दुं ^{का} कनाल व दनाय ववर्वा द्वि मि वाय हाय सु सु मा लाह ले ^{का} वि यूल
राय ना म ह न ल म य म हां ^{का} क वा स नाय क रु का या ल अ क मा ला वि गूल अ ह
द * य व ल ह का य देवी त दू य व सु य का य वि न्द मू दा ह का य सि हा स ना य धी यू
व म म न दे वा धि य ^{का} य म हा ले व वा य ^{का} दू श ह त य त यि म न उ म्ब क ह का न
र ^{का} दालू क का का वा व उ म्ब ना य य हू नि वा व रं क न र र का रं वि धि वि न
म य र च सि धि य दा य ॐ दं म या पू य धू य दी य यू जा व लि च्छु य ता का
ॐ छ नि व श या गान् गृ क्क २ ॐ दं म या र थ य नी तं गृ क्क २ नुं न र म न र व * ३
२ ल २ म हा ग म ना धि य त य व लि गृ क्क २ खा हा ॥ ३ कां कां दू ^{का} धी वि य ना न
क ले व वा य र हू का लि मी ग कि स हि ता य न क व सु य ए क व क्का य न ठ ठ जा

यजि न शाय दंष्ट्रा क नाल व द नाय व व नार्द्ध शि ना नू हाय मू लु मा ला ह व ल
य वि शू त्य शाय ना ग म ह व ल य म यू ना स नाय ख न ह ठ क क था ल या म कू म
ह काय देवी ल दू य व लु य का य वि न्द मू दा ध नाय सिं हा स नाय श्री आ य य म
म ना वि य न य स हा न वा य दं ३ ला हा ॥ २ ॥ **कुं कुं कुं कुं** श्री ग वि व हा
ल ह व वा य **कुं** स हा वि नी ह व वी म कि स हि नाय क ष्ण व लु य व क व काय
को ल मा ला क लि नाय कू ला ऊ टा मू कू ह ध नाय रु या न क म हा को ला य दं
का क नाल व द नाय दंष्ट्रा क टा ती कू नू हाय व व दं श्री गि ना नू हाय मू लु मा ला
ह व ल य वि शू त्य शाय ना ग म ह व ल य ता को स नाय नू उ उ जा य व द द लु र व